महात्मा गांधी मिशन विश्वविद्यालय,

छत्रपती संभाजीनगर

सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी.
(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का

शोध सार

"21 वीं सदी में शालेय हिंदी पाठ्यक्रम में मूल्य विधान" एक अनुशीलन’’

शोध-छात्रा

मिर्झा रियाजुन्नीसा रमजान बेग

एम. ए. हिन्दी, बी. एड.

शोध-निर्देशिका

डॉ. बासमेह शहनाज जाफर

एम. ए. हिन्दी, बी. एड., पीएच.डी.
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख
भारतीय एवं पाश्चात्य संकाय,
महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

मई – 2025

अ.क्र.	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठ क्र.
१.	प्रस्तावना	२
२.	उद्देश्य	३
३.	परिकल्पना	४
४.	सीमांकन	४
५.	कार्य योजना	४
६.	प्रथम अध्याय - मूल्य शिक्षा : एक समग्र अध्ययन	५
७.	द्वितीय अध्याय - बाल्यावस्था व नैतिक शिक्षा	७
८.	तृतीय अध्याय - किशोरावस्था और नैतिक शिक्षा	८
९.	चतुर्थ अध्याय - उत्तरदायित्त्व और नैतिकता	९
१०.	पंचम अध्याय - मूल्य शिक्षा का परिप्रेक्ष्य	११
११.	प्रश्नावली का निर्माण और संरचना	११
१२.	प्रश्नावली से प्राप्त डेटा का विश्लेषण	१२
१३.	उपसंहार	२१

प्रस्तावना :

शालेय मूल्य शिक्षा हमारे समाज के नैतिक, सामाजिक, और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान समय में, जब नैतिक मूल्यों का ह्रास होता दिखाई दे रहा है, तब विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक महसूस होती है। यह शोध प्रबंध इस विषय के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है और विद्यालयों में मूल्य शिक्षा के महत्व को उजागर करता है।

प्रारंभिक चरण में, इस शोध का मुख्य उद्देश्य मूल्य शिक्षा के सिद्धांतों और उनके ऐतिहासिक विकास को समझना था। इसके अंतर्गत, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा के महत्व और आज की शिक्षा प्रणाली में इसके समावेश का अध्ययन किया गया। इसके बाद, विद्यालयों में वर्तमान में अपनाई जाने वाली मूल्य शिक्षा विधियों का विश्लेषण किया गया।

प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करके, यह समझने का प्रयास किया गया कि मूल्य शिक्षा कैसे छात्रों की नैतिकता और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है। शिक्षकों और छात्रों के साक्षात्कार से यह स्पष्ट हुआ कि प्रभावी मूल्य शिक्षा छात्रों को न केवल अच्छे नागरिक बनाने में, बल्कि उनके सम्पूर्ण विकास में भी सहायक होती है।

शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य शिक्षा न केवल छात्रों की व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि यह उन्हें अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करती है। इसके अतिरिक्त, यह शोध यह भी सुझाव देता है कि मूल्य शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान किए जाने चाहिए।

इस प्रकार, यह प्रबंध विद्यालयों में मूल्य शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है और इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सुझाव प्रदान करता है। यह शोध शिक्षा जगत के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है और इसे विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

उद्देश्य:

१) शोधकर्ता एक शिक्षिका होने के नाते मूल्य के संवर्धन का एक छोटा सा प्रयास करना ।

२) मूल्य शिक्षा के प्रति के विविध माध्यमों का अध्ययन करना।

३) कक्षा आठवीं से दसवीं के छात्रों की हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में विशेष रूचि है यह जाना, जैसे- कुछ छात्रों को कहानियों में रुचि है, कुछ छात्रों को वर्णनात्मक पाठों में या चरित्र आत्मक पाठों में और कुछ छात्रों को कविताओं में रूचि जानना।

४) गद्य और पद्य का छात्रों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

५) अंतर्जाल एवं डिजिटल दुनिया में मूल्य के प्रभाव का अध्ययन करना।

६) छात्रों के आयु के अनुसार मूल्यों के परिणाम को जानना।

७) कक्षा आठवीं से दसवीं के साहित्यकारों की सरसरी तौर पर समीक्षा करना।

८) मूल्यों का जतन तथा संवर्धन करने में अपना छोटा सा योगदान देने का प्रयास करना ।

९) शोधप्रबंध द्वारा बदलते पीढ़ी को नैतिक मूल्यों द्वारा धारा प्रवाह में लाने का एक छोटा सा प्रयास करना ।

१०) शोधकर्ता स्वयं हिंदी भाषा शिक्षिका होने के नाते भाषा शिक्षा द्वारा आदर्श नागरिकत्व की निर्मित करने का एक छोटा सा प्रयास करना ।

परिकल्पना :

१) मूल्य व्यवस्था की संकल्पना एक समाज या समुदाय में माने जाने वाले नैतिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक मूल्यों के समूह को संदर्भित करती है। समाज व्यवस्था की संकल्पना एक समाज या समुदाय में विभिन्न संस्थाओं, संगठनों, और व्यक्तियों के बीच के संगठित संबंधों का समूह होती है। यह समाज की संरचना, कार्यप्रणाली, और इसमें शामिल विभिन्न तत्वों के बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करती है। शोधकर्ता द्वारा की गई परिकल्पना के अनुसार मूल्य व्यवस्था समाज व्यवस्था के अनुकूल है।

२) कक्षा आठवीं से दसवीं के छात्रों की हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में रुचि है।

३) गद्य तथा पद्य से ग्रहण किए गए मूल्यों का छात्रों पर अच्छा प्रभाव है।

४) अंतरजाल तथा डिजिटल दुनिया का समाज पर होने वाले प्रभाव के पश्चात छात्र नैतिक मूल्यों से प्रभावित है।

५) कक्षा अभ्यासक्रम तथा आयु के अनुसार छात्रों पर मूल्यों का प्रभाव पड़ता है।

सीमांकन :

१) भीम सिंह विद्यालय, शेवगा, छत्रपती संभाजीनगर, महाराष्ट्र के कक्षा आठवीं से दसवीं के छात्र।

२) एम. जी. एम. संस्कार विद्यालय, सेन्ट्रल नाका, छत्रपती संभाजीनगर, महाराष्ट्र के कक्षा आठवीं से दसवीं के छात्र।

३) केवल एसएससी बोर्ड

कार्य योजना

प्रथम वर्ष -

- सामग्री का संकलन किया।
- शोध प्रविधि का अध्ययन किया।

- कोर्स वर्क
- संदर्भ ग्रंथ तथा आधार ग्रंथ का अध्ययन किया।
- प्रथम अध्याय पूर्ण किया।
- प्रश्नावली लेखन किया।
- नमूना चयन निश्चित किया।

द्वितीय वर्ष

- सर्वेक्षण द्वारा सामग्री का संकलन किया।
- द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्याय का वाचन एवं लेखन किया।

तृतीय वर्ष

- पंचम तथा शष्ठम अध्याय का वाचन और लेखन किया।
- निष्कर्ष तथा संकलित सामग्री का एकत्रीकरण किया ।
- फाइनल सिनॉप्सिस (अंतिम सारांश) का लेखन किया।

अध्यायों की सूची -

प्रथम अध्याय - मूल्य शिक्षा : एक समग्र अध्ययन

प्रथम अध्याय में शोधकर्त ने मूल्य, शिक्षा, मूल्यशिक्षा की संकल्पना को प्रस्तावना, अर्थ,विविध परिभाषाएँ, स्वरूप, महत्व, उद्देश्य तथा प्रकार द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

शालेय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य न केवल छात्रों को शैक्षिक ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि उन्हें नैतिक और सामाजिक मूल्यों का संवर्धन करना भी है। हिंदी विषय, जो भारतीय संस्कृति और समाज की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखता है। इस प्रबंध का उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य के माध्यम से छात्रों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों की प्राप्ति को अध्ययन करना है।

प्रारंभिक अध्याय में, शोधकर्ता ने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का विश्लेषण किया है, जिनमें कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास शामिल हैं। इन साहित्यिक विधाओं के माध्यम से छात्रों में नैतिकता, सहिष्णुता, आदर्शवाद, और राष्ट्रीयता जैसे मूल्य स्थापित किए जा सकते हैं। इस संदर्भ में, हिंदी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं का विश्लेषण करते हुए, यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे ये रचनाएँ छात्रों के नैतिक और सामाजिक विकास में योगदान कर सकती हैं।

इसके अतिरिक्त, अध्याय में शालेय हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल विभिन्न पाठों और उनकी शिक्षण विधियों का भी अध्ययन किया गया है। शिक्षण विधियों के विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे शिक्षक इन साहित्यिक पाठों को छात्रों के लिए अधिक रुचिकर और उपयोगी बना सकते हैं, ताकि वे न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी संवर्धन कर सकें।

इस अध्याय के निष्कर्ष बताते हैं कि हिंदी साहित्य और भाषा के माध्यम से मूल्य शिक्षा की प्राप्ति एक सशक्त और प्रभावी साधन है। यह न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, यह प्रबंध हिंदी विषय के महत्व को रेखांकित करते हुए, शिक्षा प्रणाली में इसके उपयोग को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रदान करता है।

समाज और संस्कृति की धारा में मूल्य परिवर्तन एक सतत और अनिवार्य प्रक्रिया है। कालखंड के अनुसार मूल्य परिवर्तन न केवल समाज की सोच और आदतों में परिलक्षित होते हैं, बल्कि वे समाज के नैतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचे को भी प्रभावित करते हैं। इस अध्याय का उद्देश्य विभिन्न कालखंडों में हुए मूल्य परिवर्तनों का विश्लेषण करना और उनके प्रभावों को समझना है।

इस अध्याय में, शोधकर्ता ने ऐतिहासिक संदर्भों और प्रमुख घटनाओं का अध्ययन किया है, जिन्होंने विभिन्न कालखंडों में समाज के मूल्यों को प्रभावित किया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक, मूल्य परिवर्तन के विभिन्न चरणों का विश्लेषण

करते हुए, यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे समाज की सोच, व्यवहार और सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन हुए हैं।

प्रारंभिक कालखंडों में, समाज का संरचना और संगठन मूल्यों के स्थायित्व पर आधारित था। इसके विपरीत, आधुनिक युग में, तीव्र सामाजिक और तकनीकी परिवर्तनों ने मूल्य संरचना को बदल कर रख दिया है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक क्रांति, स्वतंत्रता संग्राम, और वैश्वीकरण जैसी घटनाओं ने समाज के नैतिक और सामाजिक मूल्यों को प्रभावित किया है।

इस अध्याय में, मूल्य परिवर्तन के कारणों और उनके प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शोधकर्ता ने यह भी स्पष्ट किया है कि कैसे शिक्षा, साहित्य, और संस्कृति के माध्यम से मूल्य परिवर्तनों का समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव होता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न कालखंडों में मूल्य शिक्षा के तरीकों और उनके परिणामों का भी अध्ययन किया गया है।

इस प्रकार, यह अध्याय मूल्य परिवर्तन के गतिशील और समृद्ध इतिहास को उजागर करता है और समाज के वर्तमान और भविष्य के नैतिक परिदृश्य को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

द्वितीय अध्याय - बाल्यावस्था व नैतिक शिक्षा

कक्षा आठवीं के हिंदी पाठ्य पुस्तक का अध्ययन द्वितीय अध्याय में, कक्षा आठवीं की हिंदी पाठ्य पुस्तक का गहन अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि कक्षा आठवीं के पाठ्यक्रम में शामिल साहित्यिक रचनाएँ कैसे छात्रों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का संवर्धन करती हैं। इस अध्याय से यह निष्कर्ष निकला कि हिंदी साहित्य की रचनाएँ, जैसे कि कविताएँ, कहानियाँ और निबंध, छात्रों में नैतिकता, सहिष्णुता, और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करती हैं। उचित शिक्षण विधियों के माध्यम से इन रचनाओं का प्रभाव और भी अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। शोधकर्ता ने पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों का विश्लेषण किया है और यह पाया है

कि इन पाठों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं।

मुख्य बिंदु:

१. कक्षा आठवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम की संरचना और पाठ्य सामग्री का विश्लेषण

२. पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों में मूल्य संवर्धन के अवसरों की पहचान

३. नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए उपयोग की जाने वाली गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण

४. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की कहानियों, कविताओं, और निबंधों का विश्लेषण

५. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण

निष्कर्ष:

इस अध्याय में, शोधकर्ता ने पाया है कि कक्षा आठवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में मूल्य संवर्धन के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं। यह अध्याय आगे के अध्यायों के लिए आधार प्रदान करता है, जहां हम कक्षा नौवीं और दसवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम का अध्ययन करेंगे।

तृतीय अध्याय - किशोरावस्था और नैतिक शिक्षा

कक्षा नौवीं के हिंदी पाठ्य पुस्तक का अध्ययन तृतीय अध्याय में, कक्षा नौवीं की हिंदी पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण किया गया। इस अध्याय का उद्देश्य यह पता लगाना था कि कक्षा नौवीं के पाठ्यक्रम में शामिल साहित्यिक रचनाएँ छात्रों के नैतिक और सामाजिक विकास में कैसे सहायक होती हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल कविताएँ, कहानियाँ, और नाटकों के माध्यम से छात्रों में सहिष्णुता, आदर्शवाद, और नैतिकता जैसे मूल्यों का विकास होता है। शिक्षकों की शिक्षण विधियाँ भी इन मूल्यों के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अध्याय में, शोधकर्त ने

कक्षा नवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम का विस्तृत अध्ययन किया है। हमने पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों का विश्लेषण किया है और यह पाया है कि इन पाठों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं।

मुख्य बिंदु:

१. कक्षा नवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम की संरचना और पाठ्य सामग्री का विश्लेषण ।

२. पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों में मूल्य संवर्धन के अवसरों की पहचान ।

३. नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए उपयोग की जाने वाली गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण।

४. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की कहानियों, कविताओं, और निबंधों का विश्लेषण ।

५. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण।

निष्कर्ष:

इस अध्याय में, हमने पाया है कि कक्षा नवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में मूल्य संवर्धन के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं। यह अध्याय आगे के अध्यायों के लिए आधार प्रदान करता है, जहां हम कक्षा दसवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम का अध्ययन करेंगे।

चतुर्थ अध्याय - उत्तरदायित्त्व और नैतिकता

कक्षा दसवीं के हिंदी भाषा पाठ्य पुस्तक का अध्ययन चतुर्थ अध्याय में, कक्षा दसवीं की हिंदी भाषा पाठ्य पुस्तक का गहन अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि कक्षा दसवीं के पाठ्यक्रम में शामिल साहित्यिक रचनाएँ कैसे छात्रों के नैतिक और सामाजिक मूल्यों का संवर्धन करती हैं। इस अध्याय से यह निष्कर्ष

निकला कि हिंदी साहित्य की रचनाएँ, जैसे कि उपन्यास, नाटक और निबंध, छात्रों में नैतिकता, सहिष्णुता, और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करती हैं। उचित शिक्षण विधियों के माध्यम से इन रचनाओं का प्रभाव और भी अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।शोधकर्ता ने पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों का विश्लेषण किया है और यह पाया है कि इन पाठों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं।

मुख्य बिंदु :

१. कक्षा दसवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम की संरचना और पाठ्य सामग्री का विश्लेषण

२. पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों में मूल्य संवर्धन के अवसरों की पहचान

३. नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, और राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने के लिए उपयोग की जाने वाली गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण

४. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की कहानियों, कविताओं, और निबंधों का विश्लेषण

५. पाठ्य पुस्तक में शामिल विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और प्रश्नों का विश्लेषण

निष्कर्ष :

इस अध्याय में, हमने पाया है कि कक्षा दसवीं के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में मूल्य संवर्धन के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और प्रश्न शामिल किए गए हैं। यह अध्याय हमें यह समझने में मदद करता है कि कक्षा आठवीं से दसवीं तक के हिंदी भाषा अभ्यासक्रम में मूल्य संवर्धन कैसे किया जाता है और इसके परिणाम क्या होते हैं। यह अध्याय आगे के अध्यायों के लिए आधार प्रदान करता है, जहां हम मूल्य संवर्धन के परिणामों और इसके महत्व पर चर्चा करेंगे।

पंचम अध्याय : मूल्य शिक्षा का परिप्रेक्ष्य :

इस शोध प्रबंध में, शोधकर्ता ने डेटा संग्रहण के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में प्रश्नावली का उपयोग किया है। प्रश्नावली का उद्देश्य विभिन्न दृष्टिकोणों, विचारों, और अनुभवों को समझना और विश्लेषण करना था, जिससे शोध के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके।शालेय शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास करना। नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण और समाज में उनकी सकारात्मक भूमिका को सुदृढ़ किया जा सकता है। इस प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में, शोधकर्ता ने नैतिक मूल्य पर आधारित एक प्रश्नावली तैयार की और कक्षा आठवीं से दसवीं के छात्रों से उनके उत्तर प्राप्त किए। इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य इन उत्तरों का विश्लेषण करके छात्रों में नैतिक मूल्यों की स्थिति और उनकी शिक्षा में प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है।

प्रारंभिक चरण में, नैतिक मूल्यों के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक प्रश्नावली तैयार की गई। यह प्रश्नावली छात्रों के नैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक व्यवहार, और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का आकलन करने के लिए बनाई गई थी। विभिन्न विद्यालयों के छात्रों से प्राप्त उत्तरों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिससे यह समझा जा सके कि नैतिक मूल्य किस हद तक छात्रों में स्थापित हैं। प्रश्नावली का उपयोग

प्रश्नावली का निर्माण और संरचना :

प्रश्नावली को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया था कि वह अनुसंधान के उद्देश्य और प्रश्नों को स्पष्ट और संक्षेप में संबोधित कर सके। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न शामिल होते हैं, जैसे बंद प्रश्न (Close-ended Questions), खुला प्रश्न (Open-ended Questions), और बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)।

बहुविकल्पीय प्रश्न :

- बहुविकल्पीय प्रश्नों का उपयोग विभिन्न विकल्पों के साथ उत्तरदाताओं को चुनने के लिए किया गया था। यह प्रकार विश्लेषण को अधिक व्यवस्थित और सटीक बनाता है। शोधकर्ता ने इस शोध निबंध में बहुविकल्पीय प्रश्नों की प्रश्नावली बनाई थी।

प्रश्नावली का वितरण और संग्रहण :

प्रश्नावली को लक्षित जनसंख्या में वितरित किया गया। उत्तरदाताओं को प्रश्नावली भरने के लिए उपयुक्त समय और सहायता प्रदान की गई।

प्रश्नावली से प्राप्त डेटा का विश्लेषण :

प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित डेटा का सांख्यिकीय और गुणात्मक विश्लेषण किया गया। इसके लिए विभिन्न डेटा विश्लेषण तकनीकों का उपयोग किया गया। इस शोध प्रबंध में, डेटा विश्लेषण के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में ग्राफ का उपयोग किया गया है। ग्राफिक प्रतिनिधित्व डेटा को समझने, व्याख्या करने और प्रस्तुत करने के एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है। ग्राफ के उपयोग से विभिन्न पैटर्न, रुझान, और संबंधों को आसानी से पहचाना और विश्लेषित किया जा सकता है। ग्राफ का उपयोग इस शोध में डेटा विश्लेषण के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में किया गया। इसके माध्यम से डेटा को दृष्टिगत रूप में प्रस्तुत करके विभिन्न पैटर्न, रुझान, और संबंधों को स्पष्ट रूप से दिखाया जा सका। ग्राफ के उपयोग से न केवल डेटा विश्लेषण को सरल बनाया गया, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी और सटीक बनाया गया। इस प्रकार, ग्राफ डेटा विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण और प्रभावी माध्यम साबित हुआ।

१. सांख्यिकीय विश्लेषण :

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तरों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। इसके माध्यम से विभिन्न पैटर्न और रुझानों का अध्ययन किया गया।

२. गुणात्मक विश्लेषण :

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तरों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। इसके माध्यम से उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण, विचारों, और अनुभवों का गहन अध्ययन किया गया।

श्री. भिमसिंह विद्यालय, शेवगा, जि. छत्रपती संभाजीनगर

तक्ता क्र.१

कक्षा आठवी

श्रेणी		**प्राप्त अंक**	**छात्र संख्या**	**प्रतिशत (%)**
असमाधानकारक		0-3	7	3.55%
समाधानकारक		4-7	28	14.21%
उत्तम		8-11	114	57.87%
अति उत्तम		12-15	48	24.37%
कुल		15	197	100%

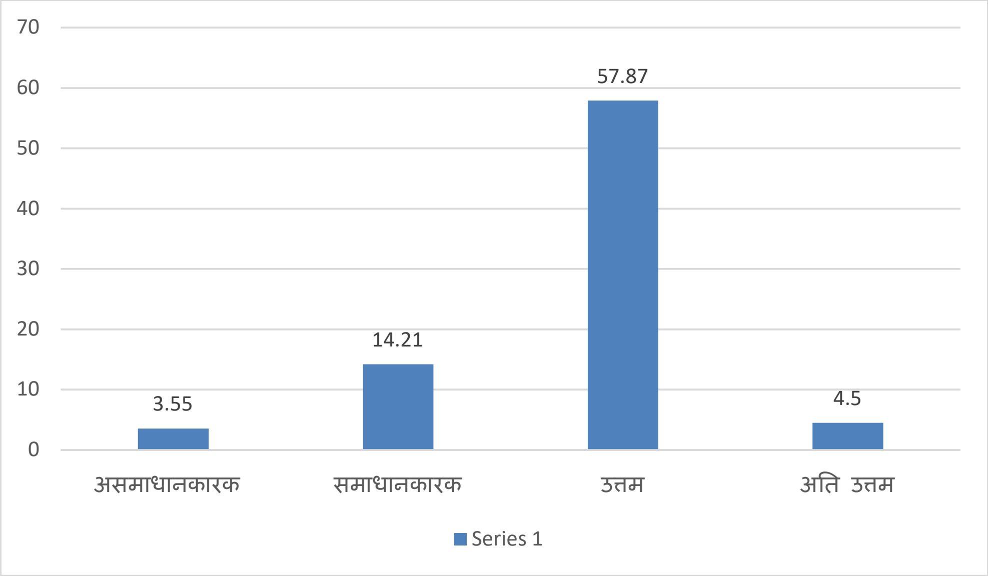

डेटा का प्रतिशत विश्लेषण : प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल १९७ छात्रों के प्रतिशत के रूप में - कक्षा आठवीं

प्रमुख निष्कर्ष

- सकारात्मक प्रतिक्रिया अधिक है – 57.87% छात्रों ने मूल्य शिक्षा को "उत्तम" और 24.37% ने "अति उत्तम" श्रेणी में रखा, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों को पाठ्यपुस्तक से लाभ हुआ।
- नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ कम हैं– केवल 3.55% छात्रों ने "असमाधान कारक" के रूप में इसे दर्ज किया। यह इंगित करता है कि मूल्य शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत सफल रहा है।
- समाधान कारक छात्रों का विश्लेषण करें – 14.21% छात्रों ने इसे "समाधान कारक" कहा, जो इंगित करता है कि उनमें कुछ सुधार या अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है। इस समूह पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो सकता है।

तक्ता क्र.२

कक्षा नौवीं

श्रेणी	प्राप्त अंक	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
असमाधानकारक	0-3	5	2.59%
समाधानकारक	4-7	34	17.62%
उत्तम	8-11	90	46.63%
अति उत्तम	12-15	64	33.16%
कुल	15	193	100%

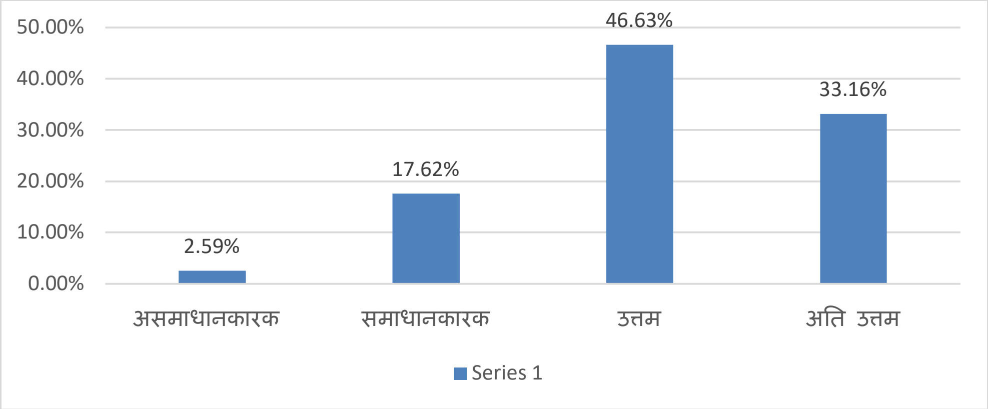

प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल १९३ छात्रों के प्रतिशत के रूप में -

प्रमुख निष्कर्ष

- सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रमुख रूप से दिखाई देती है— 46.63% छात्रों ने मूल्य शिक्षा को "उत्तम" और 33.16% ने "अति उत्तम" श्रेणी में रखा, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों को पाठ्यपुस्तक से लाभ हुआ।
- असमाधान कारक बहुत कम है— केवल 2.59% छात्रों ने इसे "असमाधान कारक" बताया, जो दर्शाता है कि मूल्य शिक्षा सामग्री अपेक्षाकृत प्रभावी रही।
- समाधान कारक छात्रों की संख्या अधिक है— 17.62% छात्रों ने इसे "समाधान कारक" कहा, जो इंगित करता है कि उनमें कुछ सुधार या अतिरिक्त मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। इस समूह पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो सकता है।

तक्ता क्र.३

कक्षा दसवीं

श्रेणी	प्राप्त अंक	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
असमाधानकारक	0-3	0	0%
समाधानकारक	4-7	41	21.03%
उत्तम	8-11	61	31.28%
अति उत्तम	12-15	93	47.69%
कुल	15	195	100%

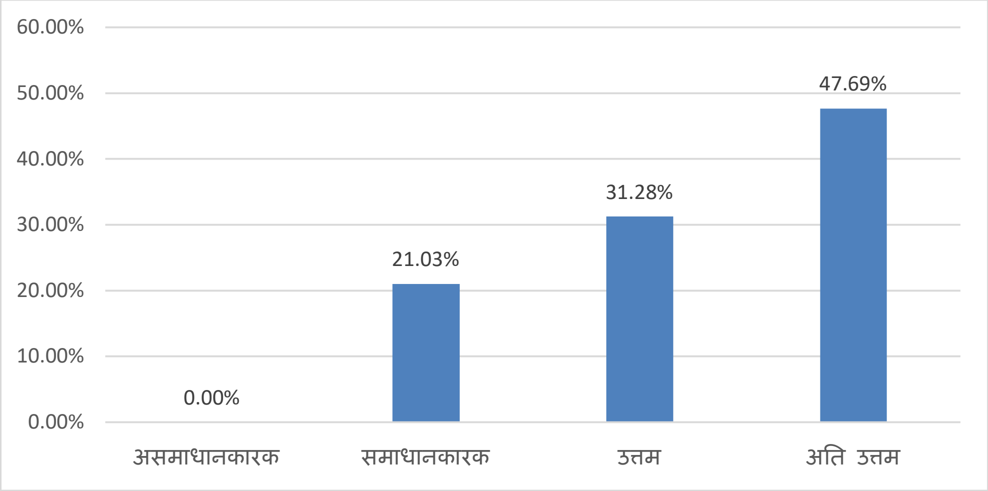

प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल १९३ छात्रों के प्रतिशत के रूप में -

मुख्य निष्कर्ष

- असमाधान कारक श्रेणी में कोई छात्र नहीं – इसका अर्थ यह हुआ कि सभी छात्रों ने मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को कम से कम संतोषजनक माना है।
- अति उत्तम श्रेणी में सर्वाधिक छात्र – लगभग 47.69% छात्रों ने पाठ्यक्रम को "अति उत्तम" श्रेणी में रखा, जिससे स्पष्ट होता है कि उच्च स्तर की स्वीकृति और प्रभावशीलता है।
- समाधान कारक श्रेणी में 21.03% छात्र – समाधान कारक श्रेणी में आने वाले छात्र इस पाठ्यक्रम को उपयोगी मानते हैं, लेकिन संभवतः कुछ सुधार की जरूरत महसूस कर रहे हैं।
- उत्तम श्रेणी में 31.28% छात्र – यह श्रेणी भी दर्शाती है कि अधिकांश छात्रों ने मूल्य शिक्षा को प्रभावी पाया है।

एम. जी. एम., संस्कार विद्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

तक्ता क्र.१

कक्षा आठवी

श्रेणी	प्राप्त अंक	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
असमाधानकारक	0-3	4	5.88%
समाधानकारक	4-7	11	16.18%
उत्तम	8-11	38	55.88%
अति उत्तम	12-15	15	22.06%
कुल	15	68	100%

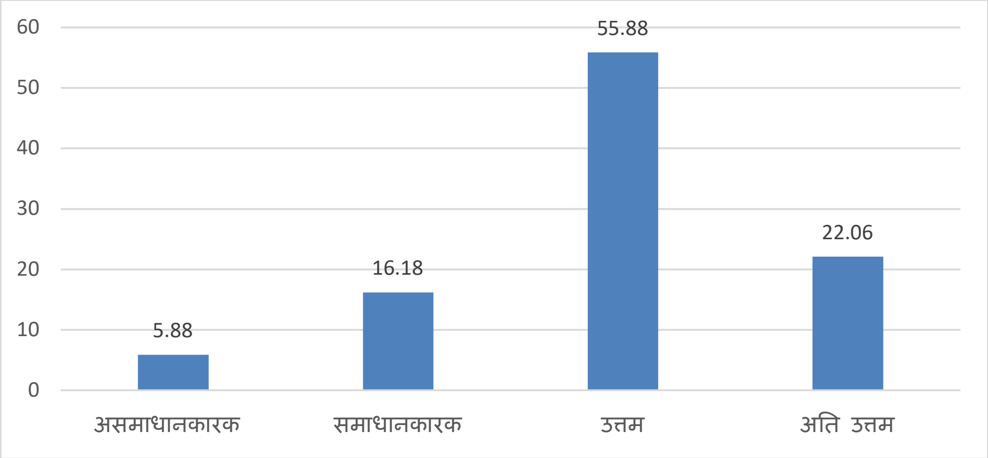

डेटा का प्रतिशत विश्लेषण

प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल ६८ छात्रों के प्रतिशत के रूप में -

प्रमुख निष्कर्ष

- सबसे अधिक छात्र (३८) "उत्तम" श्रेणी में आते हैं, जो यह दर्शाता है कि कक्षा में अधिकांश छात्र अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।
- "अति उत्तम" श्रेणी में १५ छात्र हैं, जो यह दिखाता है कि २२% छात्रों का प्रदर्शन उत्कृष्ट है।
- "समाधान कारक" श्रेणी में११(१६.१८%) छात्र है जो यह दर्शाता है की इन छात्रों को अतिरिक्त मार्गदर्शन और सहयोग की आवश्यकता हो सकती है।
- "असमाधान कारक" श्रेणी में केवल ४ छात्र हैं (५.८८%), जिससे पता चलता है कि अधिकांश छात्र संतोषजनक प्रदर्शन कर रहे हैं।

तक्ता क्र.२

कक्षा नौवीं

श्रेणी	प्राप्त अंक	छात्र संख्या	प्रतिशत (%)
असमाधानकारक	0-3	2	2.28%
समाधानकारक	4-7	14	22.95%
उत्तम	8-11	27	44.26%
अति उत्तम	12-15	18	29.51%
कुल	15	61	100%

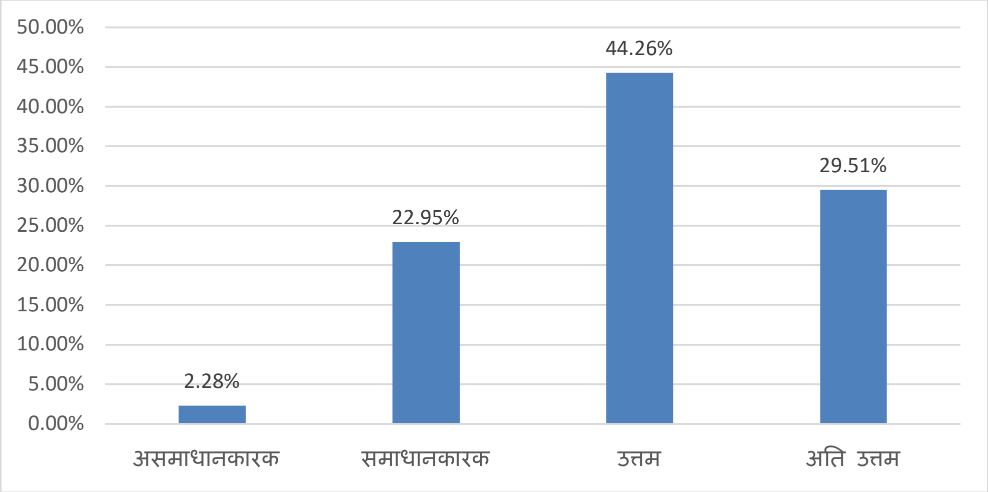

प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल ६१ छात्रों के प्रतिशत के रूप में -

प्रमुख निष्कर्ष

- सबसे अधिक छात्र (२७) "उत्तम" श्रेणी में आते हैं, जो संकेत देता है कि कक्षा का बहुमत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।
- "अति उत्तम" श्रेणी में १८ छात्र हैं, जो यह दर्शाता है कि २९.५१%छात्रों का प्रदर्शन उत्कृष्ट है।
- "समाधान कारक" और "असमाधान कारक" श्रेणियों में कुल १६ छात्र (२६.२३%) हैं, जिन्हें सुधार और अतिरिक्त मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है।
- "असमाधान कारक" श्रेणी में केवल २ छात्र (३.२८%) हैं, जिससे पता चलता है कि अधिकांश छात्र संतोषजनक स्तर पर हैं।

तक्ता क्र.३

कक्षा दसवीं

श्रेणी	**प्राप्त अंक**	**छात्र संख्या**	**प्रतिशत (%)**
असमाधानकारक	0-3	0	0%
समाधानकारक	4-7	0	0%
उत्तम	8-11	55	77.46%
अति उत्तम	12-15	16	22.54%
कुल	**15**	**71**	**100%**

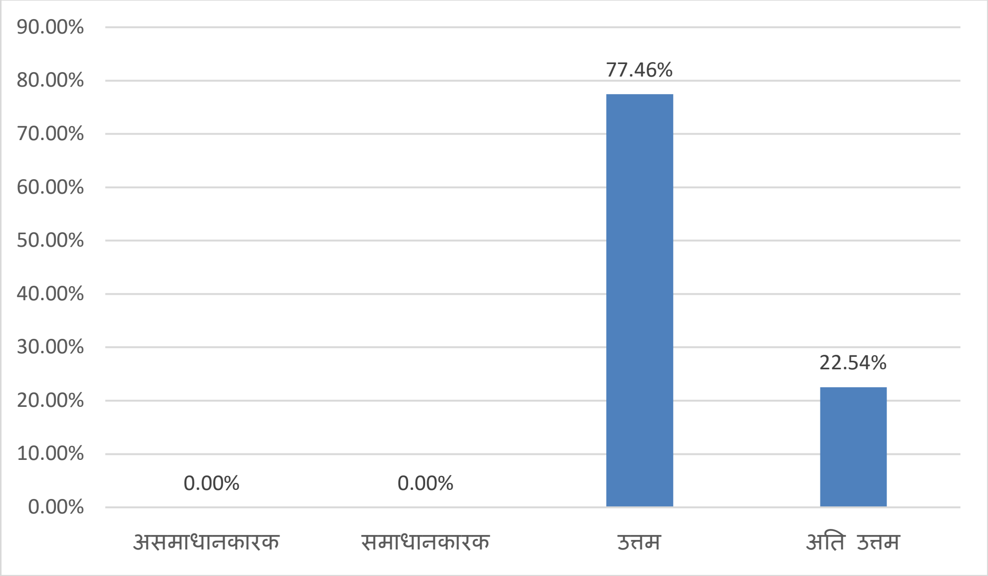

प्रत्येक श्रेणी की छात्र संख्या को कुल ६१ छात्रों के प्रतिशत के रूप में -

प्रमुख निष्कर्ष

- कक्षा में कोई भी छात्र "असमाधान कारक" या "समाधान कारक" श्रेणी में नहीं है, जो यह दर्शाता है कि सभी छात्रों का प्रदर्शन संतोषजनक से उच्च स्तर तक है।

- "उत्तम" श्रेणी में सबसे अधिक छात्र (५५) हैं, यानी ७७.४६% छात्रों का प्रदर्शन अच्छा है।
- "अति उत्तम" श्रेणी में १६ छात्र हैं, जो यह दर्शाता है कि २२.५४% छात्र उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।
- कक्षा के समग्र प्रदर्शन की दिशा सकारात्मक है, क्योंकि कोई भी छात्र कमजोर प्रदर्शन नहीं कर रहा है।

निष्कर्ष:

प्रश्नावली का उपयोग इस शोध में डेटा संग्रहण और विश्लेषण के एक प्रभावी उपकरण के रूप में किया गया। इसके माध्यम से प्राप्त जानकारी ने शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने और महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रश्नावली के माध्यम से विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों को समझकर, शोधकर्ता ने एक व्यापक और सटीक अध्ययन प्रस्तुत किया।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि नैतिक मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता विद्यालयों की पाठ्यचर्या, शिक्षकों की शिक्षण विधियाँ, और छात्रों के व्यक्तिगत परिवेश पर निर्भर करती है। प्रश्नावली के उत्तरों का विश्लेषण करके यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है और किस प्रकार से नैतिक शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस अध्याय के निष्कर्ष बताते हैं कि नैतिक मूल्य शिक्षा का प्रभाव केवल शैक्षिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार पर भी महत्वपूर्ण होता है। यह प्रबंध नैतिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए, इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रदान करता है।

उपसंहार

शोधकार्य के उपसंहार का उद्देश्य पूरे शोध प्रबंध के निष्कर्षों का सार प्रस्तुत करना और इसके संभावित प्रभावों को उजागर करना है। इस शोध प्रबंध में शालेय हिंदी विषय के माध्यम से मूल्य शिक्षा की प्राप्ति, कालखंड के अनुसार मूल्य परिवर्तन, और नैतिक मूल्यों पर आधारित प्रश्नावली के परिणामों का विश्लेषण किया गया है। इन अध्यायों के निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए, यह अध्याय मूल्य शिक्षा के महत्त्व और प्रभावशीलता को समाहित करता है।

प्रथम अध्याय में, हिंदी साहित्य और भाषा के माध्यम से छात्रों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना का विश्लेषण किया गया। यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास छात्रों में नैतिकता, सहिष्णुता, और आदर्शवाद जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करती हैं।

द्वितीय अध्याय में, शोधकर्ता ने विभिन्न कालखंडों में मूल्य परिवर्तन का अध्ययन किया। ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक परिवर्तनों ने समाज के नैतिक और सामाजिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित किया, इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में, कक्षा आठवीं से दसवीं के हिंदी भाषा पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल साहित्यिक रचनाएँ छात्रों के व्यक्तित्व विकास और मूल्य शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शालेय हिंदी पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा केवल सूचना और ज्ञान हस्तांतरण तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व, और नैतिक मूल्यों के विकास का मूलभूत साधन बनती है। वर्तमान समय में समाज तेजी से बदल रहा है, और इन परिवर्तनों के साथ नैतिक मूल्यों का क्षरण भी देखा जा सकता है। ऐसे में विद्यालयों की भूमिका केवल अकादमिक शिक्षा प्रदान करने

तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उन्हें विद्यार्थियों में सच्चाई, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता और उत्तरदायित्व जैसे गुण विकसित करने में भी सहायक बनना चाहिए।

यह शोध प्रबंध कक्षा आठवीं, नौवीं और दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का गहन अध्ययन करता है। कक्षा आठवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक के गहन अध्ययन द्वारा विश्लेषण द्वितीय अध्याय में है, कक्षा नौवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक के गहन अध्ययन द्वारा विश्लेषण तृतीय अध्याय में है और कक्षा दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक के गहन अध्ययन द्वारा किया गया विश्लेषण चतुर्थ अध्याय में है। जिससे यह विश्लेषण सामने आता है कि, पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत साहित्य, कहानियाँ, कविताएँ, निबंध और अन्य पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों में विभिन्न नैतिक मूल्यों को विकसित करने में किस हद तक सहायक होती हैं, यह अध्ययन का एक प्रमुख पहलू रहा है। इसके साथ ही, यह शोध इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करता है कि क्या वर्तमान पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को आधुनिक समाज की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक नैतिक दृष्टिकोण प्रदान कर पा रही हैं या नहीं। इस शोध का उद्देश्य केवल मूल्य शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझना ही नहीं, बल्कि यह सुझाव देना भी है कि पाठ्यक्रम में किन सुधारों की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों को नैतिक रूप से अधिक समृद्ध बनाया जा सके। शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं और नीति-निर्धारकों के लिए यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह न केवल मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता को उजागर करता है, बल्कि यह भी बताता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और समाज में उनके सक्रिय योगदान को कैसे बेहतर किया जा सकता है। हमारे निष्कर्षों से पता चलता है कि मूल्य शिक्षा छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हमने शिक्षकों और पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए सुझाव दिए हैं कि वे मूल्य शिक्षा को कैसे प्रभावी ढंग से लागू कर सकते हैं। हमें उम्मीद है कि यह शोध प्रबंध मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में योगदान करेगा और भविष्य के शोध के लिए दिशा प्रदान करेगा ।

शालेय हिंदी पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का समावेश केवल अकादमिक ज्ञान के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और मानसिक विकास को सुनिश्चित करना है। शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को न केवल ज्ञानवान बनाना है, बल्कि उन्हें एक आदर्श नागरिक के रूप में तैयार करना भी है। नैतिकता और मूल्य किसी भी समाज की रीढ़ होते हैं, जो उसके अस्तित्व और प्रगति को सुनिश्चित करते हैं। जब विद्यार्थी अपने शैक्षणिक पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों से परिचित होते हैं, तो वे अपनी व्यक्तिगत एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से समझने लगते हैं। हिंदी पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत विभिन्न साहित्यिक रचनाएँ, कविताएँ, कहानियाँ और निबंध, विद्यार्थियों को न केवल भाषा और साहित्य का ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें नैतिकता, सामाजिक सौहार्द, सहिष्णुता, परोपकार और मानवता की भावना से भी परिचित कराते हैं।

यह शोध प्रबंध मूल्य शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है और शालेय पाठ्यक्रम में इसे अधिक प्रभावी बनाने के सुझाव प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से आठवीं, नौवीं और दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि क्या वर्तमान शैक्षिक सामग्री विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए पर्याप्त है, या इसमें संशोधन की आवश्यकता है। यदि शिक्षा प्रणाली में केवल तथ्यों और सूचनाओं का समावेश होगा और विद्यार्थियों को सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से वंचित रखा जाएगा, तो समाज में नैतिक पतन की संभावना बढ़ सकती है। इसलिए, इस शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक जागरूकता उत्पन्न करना और मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करना है।

इस शोध की प्रयोगशीलता कई स्तरों पर देखी जा सकती है। सबसे पहले, यह अध्ययन नीति-निर्माताओं और पाठ्यक्रम-निर्माताओं को यह समझने में मदद करेगा कि किस प्रकार हिंदी पाठ्यपुस्तकों में मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी तरीके से समाहित किया जा सकता है। इससे भविष्य में ऐसे संशोधन संभव हो सकते हैं, जिनसे विद्यार्थियों को न

केवल विषयगत ज्ञान मिलेगा, बल्कि वे अपने सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों को भी समझ सकेंगे। इसके अतिरिक्त, यह शोध शिक्षकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि वे इसे आधार बनाकर अपने शिक्षण-पद्धतियों को अधिक प्रभावी बना सकते हैं और विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों की सामग्री के माध्यम से नैतिकता से जोड़ सकते हैं।

विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से यह शोध इसलिए भी उपयोगी है क्योंकि यह उन्हें अपने शैक्षिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में मूल्य शिक्षा के महत्व को समझने में मदद करता है। जब विद्यार्थी नैतिकता और मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से आत्मसात कर लेते हैं, तो वे अपने व्यवहार, निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक सहभागिता में अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील बनते हैं। इसके साथ ही, इस शोध के निष्कर्ष शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान करने वाले विद्वानों और सामाजिक संगठनों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे इसे आधार बनाकर मूल्य शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के प्रयास कर सकते हैं।

यह शोध केवल शालेय हिंदी पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि यह मूल्य शिक्षा की व्यापक भूमिका को भी समझने में सहायक है। इसका उपयोग शैक्षिक अनुसंधान, पाठ्यक्रम संशोधन, शिक्षण विधियों के विकास और समाज में नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए किया जा सकता है। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष शालेय शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी एवं नैतिक रूप से समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

शोध में तथ्यपरक निष्कर्ष निकालने और विषय की गहन समझ प्राप्त करने के लिए प्राथमिक स्रोतों से जानकारी संग्रहित करना एक अनिवार्य प्रक्रिया है। इस शोध के पंचम अध्याय में, शोधकर्ता ने प्रश्नावली पद्धति के माध्यम से आवश्यक जानकारी एकत्रित की है, जिससे विषय के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जा सके। प्रश्नावली एक प्रभावी अनुसंधान उपकरण है, जो उत्तरदाताओं के विचारों, अनुभवों और

दृष्टिकोणों को व्यवस्थित रूप से संकलित करने में सहायक होता है। इस में उपयोग की गई प्रश्नावली का उद्देश्य शालेय हिंदी पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा के प्रभाव को समझना और उसका वस्तुपरक मूल्यांकन करना है। कक्षा आठवीं, नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों, शिक्षकों, तथा शिक्षा विशेषज्ञों को शामिल करते हुए यह प्रश्नावली तैयार की गई, जिससे विभिन्न आयामों पर गहन समीक्षा की जा सके। इसमें मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता, उसके शिक्षण-अवधारणाओं की स्वीकृति, विद्यार्थियों के नैतिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव, और शिक्षकों की भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रश्न पूछे गए।

इस अध्याय में प्रश्नावली के निर्माण, उसका प्रशासन, डेटा संग्रहण की प्रक्रिया, और उससे प्राप्त जानकारी का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, शोध की विश्वसनीयता और निष्कर्षों की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए प्रयुक्त *शोध पद्धति* का विस्तृत विवरण दिया गया है। इस अध्याय का उद्देश्य केवल डेटा प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि संग्रहीत आंकड़ों के आधार पर मूल्य शिक्षा की वास्तविक स्थिति को समझने और उसके प्रभावों को स्पष्ट करना भी है। इस अध्याय के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष न केवल शोध के उद्देश्यों को प्रमाणित करने में सहायक होंगे, बल्कि मूल्य शिक्षा में सुधार के लिए सुझाव देने के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। इसके अलावा, यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं के लिए एक उपयोगी संदर्भ बन सकता है, जिससे वे मूल्य शिक्षा को और प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सुधारों पर विचार कर सकें।

इस प्रबंध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि मूल्य शिक्षा के माध्यम से छात्रों का समग्र विकास संभव है। हिंदी साहित्य और भाषा के माध्यम से छात्रों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है, जिससे वे समाज में अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रेरित हो सकें। इस शोध का योगदान शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और समाज के नैतिक और सामाजिक विकास में सहायक हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. डॉ. हरिदत्त शास्त्री - मूल्य शिक्षा, राजकमल प्रकाशन, (2018)
2. प्रो. रामशरण शर्मा - मूल्यों का महत्व और शिक्षा, विकास प्रकाशन, (2020)
3. डॉ. विजय लक्ष्मी, - मूल्य शिक्षा और व्यक्तित्व विकास, अटलांटिक प्रकाशन, (2019).
4. प्रो. अनिल कुमार, - शिक्षा में मूल्य संवर्धन, साहित्य भवन प्रकाशन, (2017)
5. डॉ. रजनीश कुमार - मूल्य आधारित शिक्षा, NCERT प्रकाशन, (2015)
6. एस. पी. सिंह - मूल्यों की शिक्षा और समाज, वाणी प्रकाशन, (2022)
7. डॉ. रामनाथ शर्मा - मूल्य शिक्षा और नैतिकता, रूपा प्रकाशन, (2016)
8. प्रो. वी. के. सिंह - मूल्य शिक्षा के सिद्धांत और प्रयोग, PHI लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड (2021)
9. डॉ. नारायण प्रसाद - मानव मूल्य और शिक्षा, शिल्पी प्रकाशन, (2023)
10. प्रो. कमलेश कुमार - मूल्य शिक्षा और जीवन कौशल, एस. चांद प्रकाशन, (2020).
11. डॉ. सुरेश चंद्र - शिक्षा में मूल्यांकन और संवर्धन, किताब महल प्रकाशन, (2019)
12. डॉ. सुशील कुमार शर्मा - भारतीय जीवन मूल्य, साहित्यकुंज प्रकाशन, (जुलाई 2020).
13. डॉ. गुंजनकुमार झा – नैतिक मूल्यों के विकास में साहित्य का योगदान, (अगस्त 2020)
14. रमेश पोखरियाल -मूल्य आधारीत शिक्षा, निशंक प्रभात प्रकाशन (अक्तूबर 2020)
15. डॉ. भंवर सिंह पालिया - मूल्य आधारीत शिक्षा के उद्देश एवं प्रभाव, नित्या प्रकाशन भोपाल (सप्टेंबर 2024)
16. डॉ. विवेकसिंह - हिंदी साहित्य और मूल्य परक शिक्षा (अपैल 2023)
17. डॉ. प्रविण कुमार गुप्ता - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वी सदी में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के विशेष संदर्भ में, (अगस्त 2022)

18. मूल्य शिक्षा की अवधारणा, आवश्यकता उद्देश्य और मूल्यों के प्रकार (अलाहाबाद विश्वविद्यालय)

19. अनिल कुमारसिंह कुशवाह - Research (IJFMR): "मूल्य आधारित शिक्षा: एक अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य" (18 दिसंम्बर 2024)

20. "मूल्यपरक शिक्षा का आधार है भारतीय परंपरा" : 29 जुलाई 2023 ([स्वदेश न्यूज़]

21. "मूल्य शिक्षा की अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य और मूल्यों के प्रकार": (मई 2025)

शोध-छात्रा

मिर्झा रियाजुन्नीसा रमजान बेग

शोध-निर्देशिका

डॉ. बासमेह शहनाज जाफर
प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख
महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, छत्रपती
संभाजीनगर